1974 G Umaswami Shravakachar

Sanamati Sandesh p. 10-11 (1974, vol. 3, issue 3)

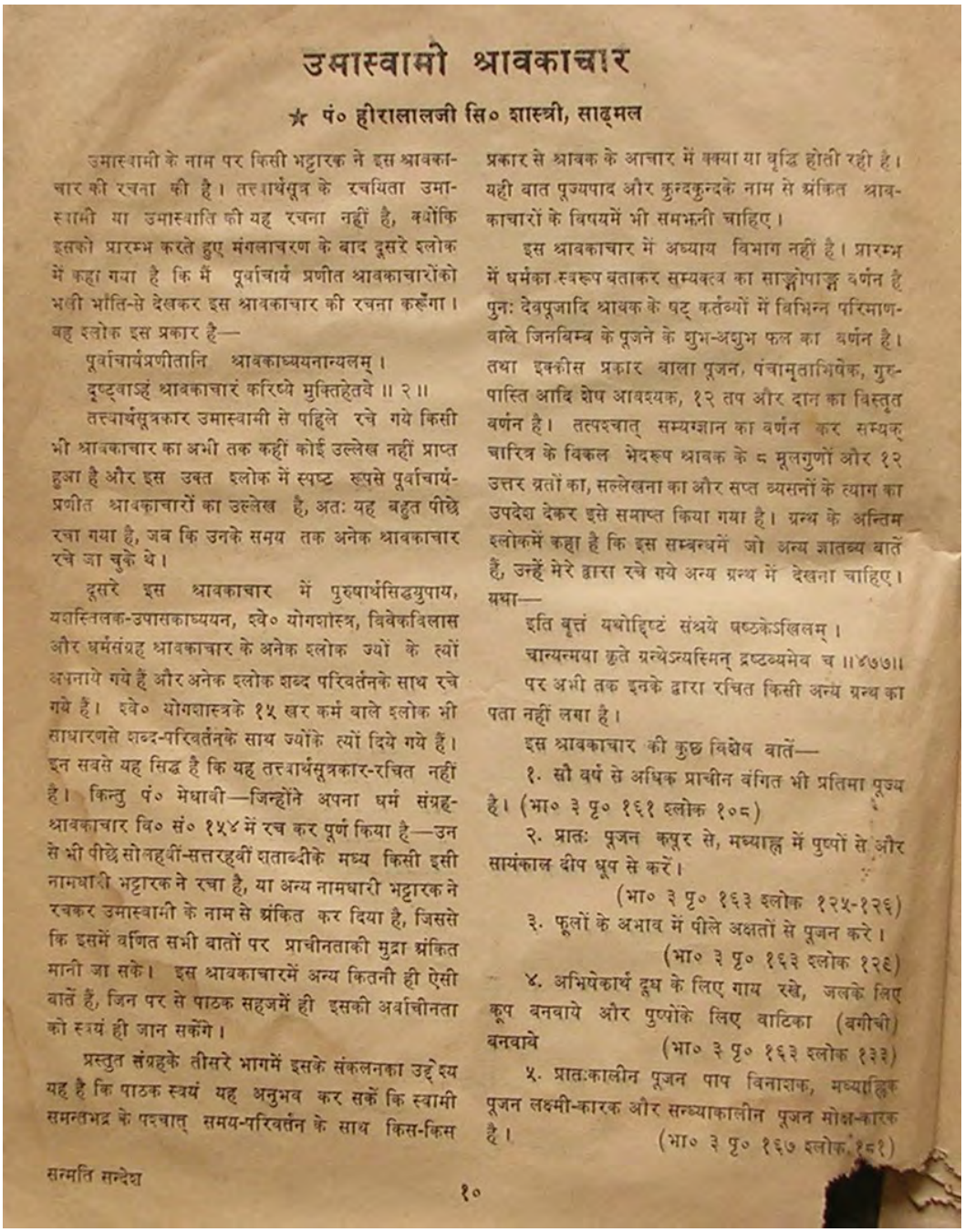

उमास्वामी श्रावकाचार

★ पं० हीरालालजी सि० शास्त्री, साढ़मल

उमास्वामी के नाम पर किसी भट्टारक ने इस श्रावकाचार की रचना की है। तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता उमास्वामी या उमास्वाति की यह रचना नहीं है, क्योंकि इसको प्रारम्भ करते हुए मंगलाचरण के बाद दूसरे श्लोक में कहा गया है कि मैं पूर्वाचार्य प्रणीत श्रावकाचारोंको भली भाँति-से देखकर इस श्रावकाचार की रचना करूँगा। वह श्लोक इस प्रकार है—

पूर्वाचार्यप्रणीतानि श्रावकाध्ययनान्यलम्।
दृष्ट्वाऽहं श्रावकाचारं करिष्ये मुक्तिहेतवे ॥ २॥

तत्त्वार्थसूत्रकार उमास्वामी से पहिले रचे गये किसी भी श्रावकाचार का अभी तक कहीं कोई उल्लेख नहीं प्राप्त हुआ है और इस उक्त श्लोक में स्पष्ट रूपसे पूर्वाचार्य-प्रणीत श्रावकाचारों का उल्लेख है, अतः यह बहुत पीछे रचा गया है, जब कि उनके समय तक अनेक श्रावकाचार रचे जा चुके थे।

दूसरे इस श्रावकाचार में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, यशस्तिलक-उपासकाध्ययन, श्वे० योगशास्त्र, विवेकविलास और धर्मसंग्रह श्रावकाचार के अनेक श्लोक ज्यों के त्यों अपनाये गये हैं और अनेक श्लोक शब्द परिवर्तनके साथ रचे गये हैं। श्वे० योगशास्त्रके १५ खर कर्म वाले श्लोक भी साधारणसे शब्द-परिवर्तनके साथ ज्योंके त्यों दिये गये हैं। इन सबसे यह सिद्ध है कि यह तत्त्वार्थसूत्रकार-रचित नहीं है। किन्तु पं० मेधावी—जिन्होंने अपना धर्म संग्रह-श्रावकाचार वि० सं० १५४ में रच कर पूर्ण किया है—उन से भी पीछे सोलहवीं-सत्तरहवीं शताब्दीके मध्य किसी इसी नामधारी भट्टारक ने रचा है, या अन्य नामधारी भट्टारक ने रचकर उमास्वामी के नाम से अंकित कर दिया है, जिससे कि इसमें वर्णित सभी बातों पर प्राचीनताकी मुद्रा अंकित मानी जा सके। इस श्रावकाचारमें अन्य कितनी ही ऐसी बातें हैं, जिन पर से पाठक सहजमें ही इसकी अर्वाचीनता को स्वयं ही जान सकेंगे।

प्रस्तुत संग्रहके तीसरे भागमें इसके संकलनका उद्देश्य यह है कि पाठक स्वयं यह अनुभव कर सकें कि स्वामी समन्तभद्र के पश्चात् समय-परिवर्तन के साथ किस-किस प्रकार से श्रावक के आचार में क्या या वृद्धि होती रही है। यही बात पूज्यपाद और कुन्दकुन्दके नाम से अंकित श्रावकाचारों के विषयमें भी समझनी चाहिए।

इस श्रावकाचार में अध्याय विभाग नहीं है। प्रारम्भ में धर्मका स्वरूप बताकर सम्यक्त्व का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है पुनः देवपूजादि श्रावक के षट् कर्तव्यों में विभिन्न परिमाण-वाले जिनबिम्ब के पूजने के शुभ-अशुभ फल का वर्णन है। तथा इक्कीस प्रकार वाला पूजन, पंचामृताभिषेक, गुरु-पास्ति आदि शेष आवश्यक, १२ तप और दान का विस्तृत वर्णन है। तत्पश्चात् सम्यग्ज्ञान का वर्णन कर सम्यक् चारित्र के विकल भेदरूप श्रावक के ८ मूलगुणों और १२ उत्तर व्रतों का, सल्लेखना का और सप्त व्यसनों के त्याग का उपदेश देकर इसे समाप्त किया गया है। ग्रन्थ के अन्तिम श्लोकमें कहा है कि इस सम्बन्धमें जो अन्य ज्ञातव्य बातें हैं, उन्हें मेरे द्वारा रचे गये अन्य ग्रन्थ में देखना चाहिए। यथा—

इति वृत्तं यथोद्दिष्टं संश्रये षष्ठकेऽखिलम्।
चान्यन्मया कृते ग्रन्थेऽन्यस्मिन् द्रष्टव्यमेव च ॥४७७॥

पर अभी तक इनके द्वारा रचित किसी अन्य ग्रन्थ का पता नहीं लगा है।

इस श्रावकाचार की कुछ विशेष बातें—

१. सौ वर्ष से अधिक प्राचीन खंगित भी प्रतिमा पूज्य है। (भा० ३ पृ० १६१ श्लोक १०८)

२. प्रातः पूजन कपूर से, मध्याह्न में पुष्पों से और सायंकाल दीप धूप से करें।
(भा० ३ पृ० १६३ श्लोक १२५-१२६)

३. फूलों के अभाव में पीले अक्षतों से पूजन करे।
(भा० ३ पृ० १६३ श्लोक १२६)

४. अभिषेकार्थ दूध के लिए गाय रखे, जलके लिए कूप बनवाये और पुष्पोंके लिए वाटिका (बगीची) बनवावे (भा० ३ पृ० १६३ श्लोक १३३)

५. प्रातःकालीन पूजन पाप विनाशक, मध्याह्निक पूजन लक्ष्मी-कारक और सन्ध्याकालीन पूजन मोक्ष-कारक है। (भा० ३ पृ० १६७ श्लोक १८१)

एक विचारणीय वर्णन

इस श्रावकाचार में २१ प्रकारके पूजन के वर्णन में आभूषणपूजन और वसन पूजन का भी उल्लेख किया गया है। यह स्पष्टतः श्वेताम्बर-परम्परा में प्रचलित मूर्ति पूजनका अनुकरण है। क्योंकि दिगम्बर-परम्परा में कभी भी वस्त्र और आभूषणों से पूजन करनेका प्रचार नहीं रहा है। सभी श्रावकाचारों में से केवल इसी में इस प्रकार का वर्णन आया है, जो कि अत्यधिक विचारणीय है।

(देखो भा० ३ पृ० १६४ श्लोक १३६)

इस श्रावकाचार में तीसरे भाग के पृष्ठ १६० परके श्लोक १०० से लेकर १०३ तक के ४ श्लोक श्वेताम्बरीय आचार्य दिनकर से लिये गये ज्यों के त्यों पाये जाते हैं। केवल भेद यह है कि इसमें सौवें श्लोक का पूर्वार्ध श्लोक १०३ के स्थान पर है इससे भी उपर्युक्त वस्त्र और आभूषण पूजनका वर्णन श्वेताम्बरीय पूजनके अनुकरणको सिद्ध करता है।

उमास्वामी-श्रावकाचार के अन्त में आये श्लोकाङ्क ४६४ के 'सूत्रे तु सप्तमेऽप्युक्ताः पृथङ्नोक्तास्तदर्थतः' इस पद से, तथा श्लोकाङ्क ४७३ के 'गदितमतिसुबोधोपास्त्यकं स्वामिभिश्च' इस पदसे जो लोग इस श्रावकाचार का रचयिता सूत्रकार उमास्वामी को मानते हैं, सो यह उनका भ्रम है। इसके लिए निम्न-लिखित तीन प्रमाण पर्याप्त हैं—

१. प्रारम्भ में पूर्व-प्रणीत श्रावकाचारों को देखकर रचने का उल्लेख।

२. सोमदेव के उपासकाध्ययन, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय आदि अनेक ग्रन्थों के श्लोकों का ज्योंका त्यों बिना नामोल्लेख के अपनाना।

३. श्रावकाचारसारोद्धार के दो सौ से अधिक श्लोकों-को अपना करके भी अन्त में उसके श्लोक के २-३ पदों का परिवर्तन करके अपने बनाने का उल्लेख करना।

आचार्य पद्मनन्दीने अपने श्रावकाचार-सारोद्धार की उत्थानिका में जैसे श्रेणिक के प्रश्न पर गौतम-गणधर के द्वारा श्रावक-धर्म का वर्णन प्रारम्भ कराया है, उसी प्रकार ग्रन्थके अन्त में उन्हीं श्रेणिक का उल्लेख करते हुए उसे समाप्त किया है, जो कि स्वाभाविक है।

उमास्वामी श्रावकाचारमें कोई अन्तिम प्रशस्ति नहीं है। तथा कुछ अनिरूपित विषयों को अपने द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ में देखने का उल्लेख मात्र किया है। पर श्रावकाचार-सारोद्धार में पद्मनन्दी ने विस्तृत प्रशस्ति दी है और जिसके लिए उसे रचा है उसका भी परिचय दिया है।

पद्मनन्दी ने अपनी गुरु परम्परा का स्पष्ट उल्लेख किया है, पर उमास्वामी श्रावकाचार के रचयिता ने न अपनी गुरुपरम्परा का उल्लेख किया है और न अपना ही कोई परिचय दिया है।

पट्टावलियों में भी श्रावकाचारके रचनेवाले उमास्वामीका कहीं कोई उल्लेख नहीं है, जब कि तत्त्वार्थसूत्रकार उमास्वाति या उमास्वामीका उल्लेख शिलालेखों तकमें पाया जाता है।

इन सब कारणों से यही सिद्ध होता है कि यह श्रावकाचार किसी भट्टारक ने इधर-उधर के अनेकों श्लोकों को लेकर तथा बीच-बीच में कुछ स्वयं रचित श्लोकों का समावेश करके रचा है।